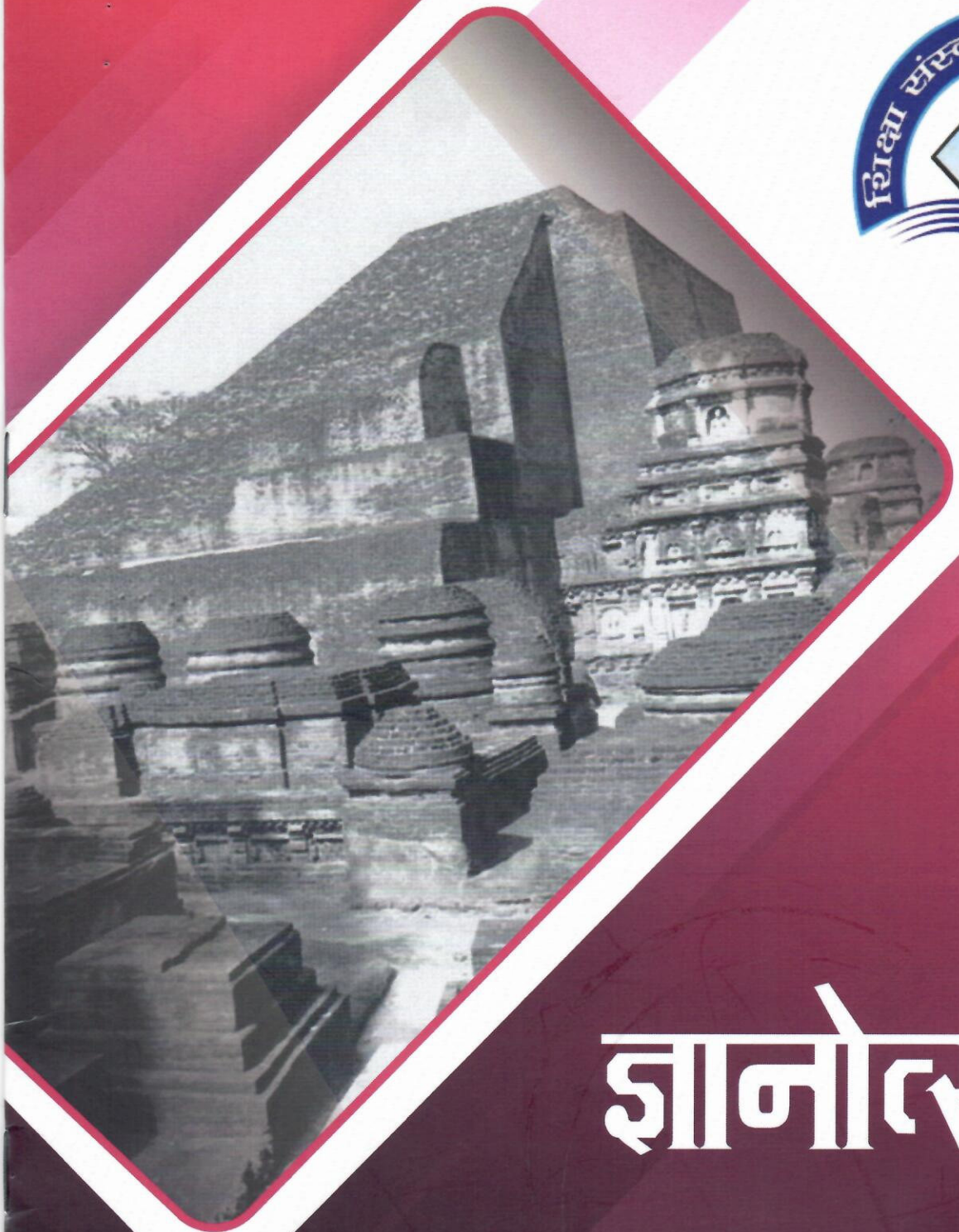

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

ज्ञानोत्सव

अतुल कोठारी
राष्ट्रीय सचिव

ज्ञानोत्सव-2076
पृष्ठभूमि

स्वतंत्र भारत में वर्ष 1948 में राधाकृष्ण आयोग, 1952 में मुदलियार आयोग तथा 1964 में कोठारी आयोग बनाये गए। इसी प्रकार 1968 एवं 1986 में शिक्षा नीतियाँ लाई गई थीं एवं वर्तमान में पुनः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रस्तावित प्रारूप देश के समक्ष प्रस्तुत हैं।

इन सारे आयोगों, नीतियों मे कई बातें समान हैं, कुछ भिन्नता भी हैं। परन्तु, अध्ययन से ध्यान में आता है कि शिक्षा के कुछ आधारभूत विषयों का समावेश लगभग सभी आयोगों एवं नीतियों में अपने-अपने शब्दों में किया गया है। परन्तु, दुर्भाग्य से इसका सही रूप से देश में क्रियान्वयन नहीं किया गया।

इस ज्ञानोत्सव-2076 में इन्हीं आधारभूत विषयों के क्रियान्वयन की दिशा में शासन, प्रशासन एवं सामाजिक स्तर पर शिक्षा - क्षेत्र में कार्य करने वाले देश के प्रमुख शिक्षाविद् मिलकर चिन्तन कर क्रियान्वयन की ठोस योजना बनाएँ, ऐसा विचार है, जो प्रमुख रूप से निम्नांकित हैः-

1. मूल्य आधारित शिक्षा
2. मातृभाषा में शिक्षा
3. चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास की शिक्षा
4. पर्यावरण की शिक्षा
5. शिक्षा में भारतीय दृष्टि एवं ज्ञान का समावेश
6. शिक्षा को व्यावहारिक दृष्टि प्रदान करना

इन विषयों पर देश के अनेक संस्थानों में कार्य भी किया जा रहा है।
हमारे देश में एक ओर विडम्बना पूर्ण स्थिति है कि शिक्षा में सुधार, परिवर्तन का कार्य मात्र सरकार का है। सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, परन्तु लोकतंत्र में समाज और सरकार तथा दोनों के संयुक्त प्रयास से ही शिक्षा में सम्पूर्ण परिवर्तन की दिशा में ठोस कदम बढ़ाया जा सकता है।

इस हेतु इस ज्ञानोत्सव में शासन - प्रशासन के प्रमुख एवं सामाजिक स्तर पर शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थानों के प्रमुख तथा देश के प्रमुख शिक्षाविद् सब मिलकर देश की शिक्षा में सुधार व परिवर्तन के प्रयास हेतु चिन्तन करते हुए क्रियान्वयन की ठोस योजना बनाएँ, ऐसा विचार है। साथ ही इस प्रयास को देशव्यापी बनाते हुए किस प्रकार नीचे की इकाई के स्तर तक बढ़ाया जा सकता है, इसकी योजना पर भी विचार हो, - ऐसी कल्पना है।

ज्ञानोत्सव-2076 में **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मा. मोहनराव भागवत जी**, केन्द्र सरकार के **मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी** एवं **बाबा रामदेव जी, श्री आचार्य बालकृष्ण जी**, भारत सरकार के केन्द्रीय संस्थानों के प्रमुख, कुलाधिपति, कुलपति, सामाजिक स्तर पर कार्य करने वाले, देश एवं राज्यों के शिक्षामंत्री, शिक्षाविद् आदि सहभागिता करेंगे।

हमारा विश्वास है कि देश की शिक्षा में आधारभूत परिवर्तन की दिशा में यह ज्ञानोत्सव-2076 एक महत्वपूर्ण कदम ; माइल स्टोन सिद्ध होगा। शिक्षा परिवर्तन के इस पावन कार्य में आप भी सहभागी होकर अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें, - ऐसी विनम्र प्रार्थना।

ज्ञानोत्सव शृंखला

राष्ट्रीय स्तर -

दिल्ली - गांधी स्मृति, राजघाट, नई दिल्ली, दिनांक 6,7,8 अप्रैल 2018

प्रान्त स्तर -

देवगिरि - उस्मानाबाद, महाराष्ट्र, दिनांक 2 , 3 अक्टूबर 2018

गुजरात - साणंद, एन. आई. टी., गांधीनगर, दिनांक 15, 16 दिसंबर 2018

आंध्र प्रदेश - गुंटुर, दिनांक 10 फरवरी 2019
तमिलनाडु, दिनांक 12 फरवरी 2019

केरल - एर्नाकुलम, दिनांक 26, 27 जनवरी 2019

महाकौशल (मध्यप्रदेश)- सागर, दिनांक 2, 3 फरवरी 2019

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास: विषय एवं आयाम

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास तथा मूल्यपरक शिक्षा :

इस विषय पर न्यास के द्वारा विद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम एवं अन्य पुस्तकें तैयार करके देश के 300 से अधिक विद्यालयों में प्रयोग प्रारम्भ किए हैं।

इसी प्रकार उच्च शिक्षा हेतु प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट कोर्स) एवं क्रेडिट पाठ्यक्रम तैयार करके तीन विश्वविद्यालयों में अनुबंध (MOU) करके लागू किया जा रहा है।

जिन संस्थानों में गम्भीरता से इसको लागू किया गया है, वहा आश्चर्यजनक एवं आनन्ददायक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

पर्यावरण शिक्षा : वर्ष 2003 में उच्चतम न्यायालय के निर्णय के कारण सभी स्तर के पाठ्यक्रमों में पर्यावरण विषय अनिवार्य है :

- कक्षा 1 से 12 तक का पाठ्यक्रम तैयार किया गया हैं।
- कक्षा 1 से 10 तक की पुस्तकें प्रथम मराठी में तैयार की गई हैं।
- इसी प्रकार इंजीनियरिंग एवं कृषि शिक्षा में पर्यावरण के समावेश हेतु भी पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। अन्य संकायों (फैकल्टी) हेतु भी भविष्य में कार्य करने की योजना हैं।
- न्यास के द्वारा एक पत्र प्रकाशित कर शैक्षणिक संस्थानों में पर्यावरण जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है, जिसके प्रभावी परिणाम सामने आ रहे हैं।

मातृभाषा में शिक्षा (भारतीय भाषा)

इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पुनः स्थापित करने के लिये देश में व्यापक जनजागरण करने की आवश्यकता है। इस हेतु न्यास के द्वारा किये जा रहे प्रमुख प्रयास इस प्रकार हैं:

- भारतीय भाषाओं पर संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं परिसंवादों का आयोजन किया जा रहा हैं;
- "मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा " पुस्तिका को विभिन्न भाषाओं में लाखों की संख्या में प्रकाशित कर वितरित किया जा रहा हैं;
- केन्द्र एवं राज्य की सरकारों के द्वारा भाषा के कानून के विरूद्ध जो कार्य किये जा रहे हैं, उसमें सुधार हेतु तीन हजार से अधिक पत्र लिखे गये हैं, जिसके कई सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हुए हैं;

अपनी भाषाओं को पुनः स्थापित करने हेतु उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाएँ एवं शासन-प्रशासन का कार्य भारतीय भाषाओं में हो, इस हेतु देशव्यापी आन्दोलन खड़ा करने के लिए "भारतीय भाषा मंच" तथा विधि एवं न्याय के क्षेत्र में कार्य हेतु "भारतीय भाषा अभियान " का भी प्रारंभ किया गया है।

प्रबंधन शिक्षा में भारतीय दृष्टि

प्रबंधन शिक्षा का स्वरूप देश की आवश्यकताओं के अनुरूप बने इस हेतु देश के प्रबंधन के विद्वानों की कार्यशालाओं का आयोजन कर एक क्रेडिट कोर्स तैयार किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम को वर्तमान पाठ्यक्रम के साथ क्रेडिट कार्ड के रूप में लागू किया जा सकता है, जिसके माध्यम से वर्तमान प्रबंधन के पाठ्यक्रम की कमी को दूर किया जा सके।

शिक्षक शिक्षा (बी.एड., एम.एड.)

इस पाठ्यक्रम में व्यावहारिकता, भारतीयता एवं छात्रों के व्यक्तित्व के समग्र विकास का समावेश करके न्यास के माध्यम से देशभर में शिक्षक-शिक्षा के विद्वान आचार्यों की कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यालय से प्राप्त सुझावों के आधार पर पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य जा रहा है।

तकनीकी शिक्षा

इस हेतु प्रयागराज, जालंधर, सूरत, त्रिची एवं त्रिपुरा के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में कार्यशालाओं का आयोजन करके एन.आई.टी के पाठ्यक्रम एवं पूर्ण व्यवस्था में किस प्रकार एवं क्या-क्या सुधार किये जा सकते हैं, इस पर कार्य किया जा रहा है। इन सारी कार्यालय में आए सुझावों का एक प्रतिवेदन तैयार करके मानव संसाधन विकास
मंत्रालय को सौंपा जाएगा।

शिक्षा की स्वायत्तता

शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन हेतु शिक्षा स्वायत्त होना अनिवार्य है। इस हेतु विद्यालय / महाविद्यालय / विश्वविद्यालयों एवं राज्य तथा केन्द्र सरकार के स्तर पर शिक्षा में स्वायत्तता की दृष्टि का विकास करने हेतु संगोष्ठियों, परिचर्चाओं का आयोजन करके इस विषय में जागरूकता एवं सहमति बनाकर देश की शिक्षा स्वायत्त बने इस हेतु कार्य प्रारंभ किया गया है। इस हेतु एक पुस्तिका का भी प्रकाशन किया गया है।

प्रकल्प: प्रतियोगी परीक्षा

विभिन्न प्रकार की विविधताओं एवं भिन्नताओं को एक समरस धागे में बांधे भारत देश में सुशासन प्रदान करना एक जटिल चुनौती है। इस चुनौती से पार पाने हेतु आवश्यक प्रशासन तंत्र के सूत्रधारों का चयन भी चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी देश की प्रशासन व्यवस्था अंग्रेजों द्वारा रचित ICS पद्धति पर ही आधारित है। चयन परीक्षा भी ब्रिटिश काल के अनुरूप ही चली आ रही थी। न्यास का मानना है कि इस प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इसी दिशा में न्यास के प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत सरकार ने बी एस बासवान समिति का गठन किया था। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए राज्यों में भी परीक्षा प्रणाली में सुधार हेतु न्यास का प्रकल्प कार्यरत है।

प्रकल्प के ध्येय वाक्य 'संवाद-सुझाव-सुधार' को कृति में लाते हुए छात्रों से संवाद कर, विद्वानों से चर्चा कर सुझाव एकत्रित कर उनको उचित पटल तक ले जाने का कार्य कर इन परीक्षाओं में अनुपलब्ध शिकायत निवारण व्यवस्था की दिशा में कार्यरत हैं।

शिक्षा में नए विकल्प का प्रारूप

24 मई 2007 को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। न्यास का लक्ष्य तय किया गया, "देश की शिक्षा को एक नया विकल्प देना।" इसी उद्देश्य से न्यास ने शिक्षा के आधारभूत विषयों पर कार्य प्रारंभ किया। न्यास ने जिन विषयों पर कार्य प्रारंभ किए उन विषयों का वैकल्पिक पाठ्यक्रम तैयार किया गया। देश-भर में सैकड़ों की संख्या में संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएं एवं परिचर्चाएँ सफलता पूर्वक आयोजित कर विद्वानों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी विमर्श में सम्मिलित किया गया। इनके आधार पर 'शिक्षा में नये विकल्प का प्रारूप ' तैयार कर एक छोटी पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस प्रारूप पर देश-भर में चर्चा-सत्र भी आयोजित किये जा रहे हैं।

इसमें देश-भर से सुझाव प्राप्त करके तात्कालिक रूप से इस प्रारूप पुस्तिका के रूप में प्रकाशित की गयी है, जिसे विस्तारित करके एक बड़ी पुस्तक देश के समक्ष प्रस्तुत करने की योजना है। यह पुस्तिका अंग्रेजी, मलयालम एवं गुजराती भाषा में अनुवाद भी की

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के साथ किये गए अनुबंध (MOU)

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा विद्यालयीन स्तर पर कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम एवं उच्च शिक्षा हेतु प्रमाण-पत्र व क्रेडिट पाठ्यक्रम तैयार किया गया है|

क्र.	विद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम	स्थान
1.	स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय	सागर, मध्यप्रदेश
2.	चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय	भिवानी, हरियाणा
3.	इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय	मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा
4.	भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय	सोनीपत, हरियाणा
5.	आर्यभट्ट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड रिसर्च सेंटर	अजमेर, राजस्थान
6.	अग्रवाल महाविद्यालय	बल्लबगढ़, हरियाणा
7.	केशव विद्या पीठ	झाबुआ, मध्यप्रदेश
8.	शारदा विद्या मंदिर	झाबुआ, मध्यप्रदेश
9.	केशव इंटरनेशनल स्कूल	झाबुआ, मध्यप्रदेश
10.	यूनिक इंटरनेशनल स्कूल	इडर, गुजरात
11.	नीलकंठ इंटरनेशनल स्कूल	साणंद, गुजरात
12.	सर्वहितकारी विद्या मंदिर	तलवाड़ा, पंजाब
13.	सैफाली इंटरनेशनल स्कूल	लुधियाना, पंजाब

वैदिक गणित

वैदिक गणित पर कक्षा 1 से 12 तक का पाठ्यक्रम एवं प्रमाण-पत्र तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रम तैयार कर, निम्नलिखित संस्थानों में अनुबंध कर के लागु किया गया है|

क्र.	विद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम	स्थान
1.	इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय	मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा
2.	चौ. बन्सिलाल विश्वविद्यालय	भिवानी, हरियाणा
3.	अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय	भोपाल,मध्यप्रदेश
4.	चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय	जीन्द, हरियाणा
5.	चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय	मेरठ, उत्तरप्रदेश
6.	डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय	सागर, मध्यप्रदेश
7.	कालिदास संस्कृत विद्यापीठ	नागपुर, महाराष्ट्र
8.	भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय	खानपुर, हरियाणा

पर्यावरण

क्र.	विद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम	स्थान
1.	दक्षिणा फाउंडेशन (MOU, पर्यावरण)	दिल्ली